ShodhVarta
An International Peer-Reviewed Journal
www.shodhvarta.in

Vol 02 Issue 03

A Critical Study of Folk Sayings by Lok Kavi Ghaagh and Bhaddari on Farming Values

Received: 17 June 2023
Reviewed: 23 June 2023
Accepted: 28 June 2023
Published: 30 June 2023
Paper ID: 230606

Omprakash Sunda
Research Fellow
Department of Hindi, Central University of Rajasthan
Ajmer, Rajasthan
Email: opsunda2408@gmail.com

Abstract

In medieval Hindi literature, Lok Kavis Ghaagh and Bhaddari composed sayings and folk sayings that were based on agricultural life. Due to a lack of specific information about their lives, it cannot be definitively stated whether they were the actual authors or if these sayings were popularized under their names within the farming community. This is because different regions may have variations of the same saying. Ghaagh's sayings are directly related to the farmer's perspective, while Bhaddari's sayings are based on astrology. It is not possible for any farmer to rely on astrology for farming under any circumstances. So how did these sayings based on astrology become prevalent in the context of agricultural life? Ramnaresh Tripathi compiled the sayings and evaluated them based on agricultural values. However, blending folklore and astrology raises questions about the purity of folk poetry, as it may become contaminated. This raises the question of how an ordinary farmer living in a village can express such sayings. It is through these compiled sayings that we get a glimpse of the life and structure of the aboriginal society, while also questioning the role of science in folk poetry and specifically in agricultural life. An attempt has been made here to draw conclusions and address these questions through these sayings.

Keywords – Folk poetry, related to farming, farming values, astrology, proverbs.

किसानी मूल्यों पर लोक कवि घाघ और भड्डरी की लोकोक्तियाँ का आलोचनात्मक अध्ययन

सारांश (Abstract) –

मध्यकालकालीन हिंदी साहित्य में लोक कवि घाघ और भड्डरी की कहावतें/ लोकोक्तियाँ जो कि किसान जीवन को आधार बनाकर रची गई है। उनके जीवन के बारें में कोई ख़ास जानकारी उपलब्ध नहीं होने के कारण हम निश्चित रूप से नहीं कह पाते कि इनके रचनाकर ये लोग ही थे या किसान समाज में फैली उक्तियाँ इनके नाम से प्रचलित हो गई क्योंकि अलग-अलग क्षेत्रों में एक ही उक्ति अलग प्रकार से मिलती है। घाघ की उक्तियाँ शुद्ध रूप से किसान लोक से सम्बन्ध रखती है लेकिन भड्डरी की उक्तियाँ ज्योतिष शास्त्र को आधार बनाकर लिखी गई है। किसी भी स्थिति में किसी किसान के लिए ज्योतिष के आधार पर खेती करना संभव नहीं है। तो फिर किसान जीवन को लेकर ज्योतिष शास्त्र में ऐसी उक्तियाँ कैसे प्रचलित हो गई? रामनरेश त्रिपाठी द्वारा संकलित उक्तियाँ को आधार बनाकर किसानी मूल्यों के पैमाने पर इनका मूल्यांकन किया गया है। लोक और शास्त्र के आपस में मिलने से शुद्ध लोक कविता प्रदूषित हो जाने के कारण इस प्रकार के प्रश्न सामने आते हैं कि कैसे कोई गाँव में रहने वाला साधारण किसान ऐसी उक्तियाँ कह सकता है। इन संकलित उक्तियों में ही हमें आभिजात्य समाज का जीवन और संरचना मिलती है जबकि लोक कविता और वह भी किसान जीवन, उसमें शास्त्र का क्या काम। इन्ही सब सवालों को इनकी उक्तियों के माध्यम से एक निष्कर्ष की ओर ले जाने का प्रयत्न यहाँ किया गया है।

बीज शब्द (Keywords)- लोक कविता, खेती सम्बन्धी, किसानी मूल्य, ज्योतिष शास्त्र, लोकोक्तियाँ

प्रस्तावना – (Introduction)

लोक कविता व्यक्ति विशेष को भिन्न-भिन्न समयों पर हुए अनुभवों और प्रयोग से निसृत होती हुई पहले समाज के एक छोटे से हिस्से में मान्यता के रूप में सामने आती है। जब लम्बे समय तक वही बात सिद्ध होती रहे तब उसके संचय के लिए समाज के ही व्यक्तियों द्वारा उसे गेयता प्रदान कर दी जाती है। वह गेय रूप कब से चला आता है और किस व्यक्ति ने सबसे पहले उसको गाया था तथा उसका शुरूआती रूप क्या रहा होगा, उसमें समय और अनुभवों के साथ क्या-क्या बदलाव आये होंगे, यह हम बता नहीं सकते क्योंकि उसका कोई रचनाकार न होने की वजह से वे समाज का वह जीवंत हिस्सा है जो समाज विशेष के ही काम का है। प्रत्येक लोक कविता या साहित्य का यह हठ ही समझना चाहिए कि पैमाना बनाकर उसके आलोचक नहीं हो सकते और न ही उसके भाषायी रूप को निर्धारित कर सकते चूँकि वह व्यक्तिगत अनुभवों से शुरू होकर समुदाय की मान्यताओं और रुढियों को भी साथ लिए चलता है। भारतीय सामाजिक संदर्भों में देखें तो यहाँ लोक कविता का मतलब ही खेती-किसानी करने वाले लोगों के कंठ से उत्पन्न गीत और लोकोक्ति, मुहावरे, नैतिक उक्तियाँ इत्यादि है क्योंकि यहाँ का मानव इतिहास गाम समुदाय से होता हुआ पिछले दौ सौ वर्षों में ही शहरी संगठनों की ओर बढ़ा है। इससे पूर्व खेतीहर कबीलों का ही वर्चस्व रहा है। उनका सामाजिक ढाँचा, रहन-सहन का स्तर, खेती की तकनीकें, बीजों की गुणवत्ता, फसलों और मौसमों के चक्र का परिज्ञान इत्यादि कहीं किताबों में दर्ज नहीं है।

छापेखाने के आविष्कार और अंगरेजों द्वारा शिक्षा का प्रसार करने के उपरांत यह कार्य तेज गति से हुआ और लोक कविताओं का संकलन होने लगा। घाघ और भड्डरी के नाम से प्रचलित लोक कहावतें भी इसी प्रकार से संकलित होकर हमारे सामने है। आज उन उक्तियों का कोई महत्व नहीं रह गया है क्योंकि खेती में हम तकनीकी रूप से काफी आगे बढ़ गए हैं और किसानी की परिभाषा ही बदल गई है। लेकिन साहित्य की दृष्टि से उन पर विचार करना जरूरी है क्योंकि तत्कालीन समाज के आकार प्रकार और सामाजिक संरचना की जानकारी वह हमें कराती है। साथ ही उस समाज में ज्ञान के स्वरूप का दिग्दर्शन भी उनमें निहित है।

उद्देश्य- (Objectives)

इस शोध पत्र के माध्यम से किसानी मूल्यों पर लोक कवि घाघ और भड्डरी की लोकोक्तियों का आलोचनात्मक अध्ययन करने का प्रयास करेंगे-

1. लोक कवि घाघ और भड्डरी की लोकोक्तियों को किसानी मूल्यों के प्रतिस्पर्धीता और भावुकता के प्रकटीकरण के द्वारा मूल्यांकन करना।
2. इन लोकोक्तियों की व्याख्या करके, उनके विचारधारा, व्यंग्य, और कवित्व संबंधी पक्षों का अध्ययन करना।
3. किसानी मूल्यों को सांस्कृतिक और सामाजिक संदेशों के साथ जोड़ने के लिए इन लोकोक्तियों का मूल्यांकन करना।
4. घाघ और भड्डरी के कृतित्व की पहचान करके किसानी मूल्यों पर इन लोकोक्तियों के प्रभाव को समझना।
5. इन लोकोक्तियों के माध्यम से किसान जीवन, कृषि कार्यों, और कृषि समाज की महत्वपूर्ण पहलुओं को प्रकट करना।

इस आलोचनात्मक अध्ययन के माध्यम से हम किसानी मूल्यों पर लोक कवि घाघ और भड्डरी की लोकोक्तियों के महत्वपूर्ण पक्षों का मूल्यांकन करके, इन्हें कृषि समाज और सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा साबित करने का प्रयास करेंगे।

पृष्ठभूमि (Background)

किसानी जीवन हमारे देश की मूलभूत पीढ़ी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। देश के अधिकांश लोग कृषि के आधार पर अपना जीवन यापन करते हैं और अपने परिवार को पोषण देने के लिए खेती करते हैं। यह आधारभूत सतत जीवनशैली अनेक आधारभूत सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों का प्रतीक है।

लोक कवि घाघ और भड्डरी ने इस किसानी जीवन को आदर्शित करते हुए अपनी कविताओं और लोकोक्तियों का समावेश किया। घाघ ने खेती में किसानों की कठिनाइयों, उनकी मेहनत और संघर्ष को व्यक्त किया है। उनकी लोकोक्तियाँ सीधे किसान जीवन से संबंधित हैं और किसानों के दुःख-दर्द को अभिव्यक्त करती हैं। वे खेतों को एक मातृस्वरूप मानवीय प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करती हैं, जबकि खेती एक पुरुष मजदूरी भी है। वहीं, भड्डरी की लोकोक्तियाँ ज्योतिष शास्त्र पर आधारित हैं और इस विज्ञान को खेती में उपयोग करने की बात करती हैं। यद्यपि किसी भी स्थिति में ज्योतिष के आधार पर खेती करना संभव नहीं है, लेकिन इन लोकोक्तियों का प्रचलन बताता है कि ज्योतिष की प्रभावशाली गोली भी किसान समाज में चली गई है।

रामनरेश त्रिपाठी ने इन लोक कवि के संकलन के माध्यम से किसानी मूल्यों को मूल्यांकित किया है। इस अध्ययन के माध्यम से, हमें आभिजात्य समाज के जीवन और संरचना का अध्ययन मिलता है, जबकि लोक कविता में किसान जीवन का और उसमें शास्त्र का क्या काम है, इन सवालों का उत्तर इन लोकोक्तियों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

विश्लेषण (Analysis)

हम घाघ और भड्डरी की इन लोकोक्तियों पर आयें उससे पूर्व इनके जीवन और इनके बारें में प्रचलित धारणाओं पर बात कर लेते हैं। सर्वप्रथम हिंदी में रामनरेश त्रिपाठी ने इनकी उक्तियों का संकलन हमारे सामने प्रस्तुत किया। इससे पूर्व हिंदी साहित्य के इतिहासों में इनके नाम का सामान्य परिचय के साथ जिक्र मात्र मिलता है। त्रिपाठी जी संकलन में 'घाघ की जीवनी' में इनके बारें में प्रचलित और लिखित तथ्यों को उद्धृत करते हैं। उन्होंने शिवसिंह सरोज, हिंदी शब्दसागर, भारतीय चरिताम्बुधि, श्रीयुत पीर महमूद मुनिस, पंडित कपिलेश्वर झा, रायबहादुर बाबू मुकुन्दलाल गुप्त 'विशारद', राजा साहब पंडरौना आदि के संदर्भों के साथ इनके जीवन के बारें में अनुमान लगायें है।[1] त्रिपाठी जी ने लम्बी भूमिका लिखी है जिसमें वे कृषि पराशर में खेती और अन्न की महत्ता पर कहें श्लोक तथा खेती की आदिम अवस्था पर बात करते हैं। संकलन के संघर्ष को बताते हैं तथा साथ ही घाघ और भड्डरी की कहावतों की मूल बातों को भी उद्धृत करते हैं। इनकी भूमिका के सम्बन्ध में कुछ आपतियाँ दर्ज करने लायक हैं।

अगर निकट से धरातल पर जाकर अनुभव किया जाए तो आदिम काल से लेकर अब तक किसानी सभ्यता में सबसे कम पाखंड और पूजा पद्धतियाँ है। साथ ही किसानी ज्ञान का आधार अनुभव है और किताबी ज्ञान का सम्पूर्ण अभाव आज से 70 से 100 साल पहले तक पाया जाता है। त्रिपाठी जी भूमिका में लिखते हैं कि "इस देश में इतना अन्न और दूध होता था कि प्रत्येक व्यक्ति प्रातःकाल अग्नि और घी से अग्निहोत्र करके भी अन्न और घी नहीं चुका पाता था। लोग खूब खाते थे और अतिथियों को भी खूब खिलाते थे।" (त्रिपाठी, 1) अग्निहोत्र की क्रिया किसान जातियों में कब प्रचलित रही है? यह बात हवा-हवाई है। दूसरा प्रत्येक व्यक्ति अग्निहोत्र करता था, यह कैसे संभव है? अग्निहोत्र करना बामण जातियों में हो सकता है और ये तब की बात कर रहे है उस समय तो शायद उनमें भी इस रूप में प्रचलित नहीं होगा। इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि वैदिक काल में भी सामान्य जनता में अग्निहोत्र जैसी क्रियाएँ प्रचलित रही हो। ऋग्वेद में भी इस बात का कहीं जिक्र नहीं मिलता। आगे चलकर वे पराशर मुनि से इन बातों को जोड़ देते हैं जबकि कृषिपराशर में भी इन सबका जिक्र नहीं मिलता। वहाँ केवल खेती की महिमा है और खेती के औजारों, तकनीक और माप सम्बन्धी जानकारियाँ ही मुख्य है। जिन घाघ और भड्डरी की लोकोक्तियों का संकलन वे कर रहे हैं उनमें भी कहीं भी अग्निहोत्र क्रिया का जिक्र नहीं है।

दूसरी बात यह कि त्रिपाठी जी उस समय की हिन्दू साम्प्रदायिक दृष्टि के शिकार हो जाते हैं। उन्होंने घाघ और भड्डरी की लोकोक्तियों का जितना संकलन किया है उसका 95 प्रतिशत हिस्सा सीधे किसानी से जुड़ा हुआ है। उनके समय किसान किस धर्म का पालन करने वाले थे इसकी कोई तथ्यात्मक जानकारी हमारे पास उपलब्ध नहीं है और न ही त्रिपाठी जी ने इस सम्बन्ध में कुछ कहा है। वे लिखते हैं कि "हिन्दुओं में खेती का सिलसिला आदिम काल से है। इससे खेती सम्बन्धी उनके अनुभव भी बहुत पुराने हैं।" (त्रिपाठी, 1) त्रिपाठी जी ने यहाँ कहीं भी किसान शब्द का जिक्र नहीं किया। वे यह तो कह देते हैं कि अन्न और खेती की महिमा क्या है, इसकी साक्षी के लिए हमें ऋषि मुनियों की जरूरत नहीं है लेकिन समझ नहीं आता कि ऋषि मुनियों की साक्षी की जरूरत पड़ने ही क्यों लगे? ऋषि मुनियों का क्षेत्र पढ़ाई-लिखाई का हो सकता है, शिक्षा के क्षेत्र में नये प्रयोगों का हो सकता है लेकिन घाघ और भड्डरी के नाम से प्रचलित लोकोक्तियों का आधार तो अनुभव जन्य ज्ञान ही है न कि शास्त्र। उनकी यह बात सौ टका सच है कि उनके खेती सम्बन्धी अनुभव बहुत पुराने हैं, लेकिन वे हिन्दुओं के ही हैं, इस बात में उनकी मंशा कुछ ओर नजर आती है। भड्डरी के नाम से प्रचलित लोकोक्तियों में अधिकांश में ज्योतिष ज्ञान का ही बखान है। आश्चर्य है कि ज्योतिष का ज्ञान साधारण और बिना पढ़े लिखे व्यक्ति को नहीं हो सकता।

[1] घाघ और भड्डरी की इन लोकोक्तियों का संकलन त्रिपाठी जी के बाद कई लोगों ने निकाला लेकिन किसी ने भी नया कुछ भी नहीं जोड़ा| हिंदी अकादमिक दुनिया में चोरी करना गर्व जैसा विषय हो गया है| जिन लोगों ने बाद में इनकी उक्तियों को सम्पादित किया तो रामनरेश त्रिपाठी की लिखीं भूमिका और घाघ भड्डरी की जीवनी लिखने का श्रेय त्रिपाठी जी को कहीं नहीं दिया| महाशय ***दीपन कुमार चक्रवर्ती*** ने 'घाघ और भड्डरी' नाम से संकलन निकाला जिसकी भूमिका के अंत में अपना नाम दे दिया जबकि त्रिपाठी जी की लिखी हुई भूमिका और उनके जीवन वृतांतों से एक भी शब्द अलग नहीं हैं उलटे कुछ बातें बीच-बीच से हटा ओर दी गई है| इससे भी दुखद यह है कि अंत में रामनरेश त्रिपाठी जी को धन्यवाद दे दिया कि इनके सहयोग से यह पुस्तक पूर्ण कर पाया हूँ| शायद इनको पता ही नहीं कि त्रिपाठी जी कब के साहित्यकार हैं| सबसे शर्मनाक बात यह है कि छतीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने इनको शुभकामनाएं भी दे रखी है तथा उनके अन्य मंत्रियों ने भी| आगे सम्पूर्ण संकलन में कही भी कोई बदलाव नहीं है| एक हैं ***डॉ. किरण त्रिपाठी***| इन्होने तो रामनरेश त्रिपाठी के लिखे हुए को अपना सिद्ध करने के लिए भाषा में लिंग परिवर्तन कर दिया है| त्रिपाठी जी ने घाघ के जन्म स्थान की खोज के सिलसिले में लिखा है कि 'मैंने प्राय: सब स्थानों की खोज की| कहीं-कहीं मैं स्वयं गया और कहीं अपने आदमी भेजे और कही पत्र भेजकर पता लगाया| किरण त्रिपाठी ने 'गया' की जगह 'गयी' कर दिया है| इनके बारें में लिखा है कि यह जगदुरु रामानन्दचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट में हिंदी की प्रवक्ता है|

अगर ज्योतिष ज्ञान की बात करें तो दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में ज्योतिष विद्या हमसे भी उन्नत अवस्था में हैं जबकि वहाँ की अधिकांश जनता मुश्लिम है।

भड्डरी के जीवन के बारें में बात करते समय वे कहते हैं कि मारवाड़ प्रान्त में 'डंक कहे सुन भड्डरी' का प्रचलन है और बिहार में घाघ के प्रचलित कई नामों में से एक नाम डाक और भाड़ नाम प्रसिद्ध है। उनका कहना है कि यह डाक ही डंक है और भाड़ ही भड्डरी है। मतलब वे कहना चाहते हैं कि दोनों एक ही व्यक्ति हैं। केवल क्षेत्र विशेष में अलग-अलग नामों से प्रसिद्ध हो गए। पहली बात तो यह कि बिहार और मारवाड़ की भौतिक दूरी इतनी है कि बिहार के लोक कवि की उक्तियाँ इतने कम समय में जिस वक्त संचार का कोई साधन नहीं हुआ करता था, मारवाड़ तक फैल जाए यह असम्भव है। दूसरी, खेती की फसलें, मौसम और समय, मानसून आने का समय; सब कुछ दोनों क्षेत्रों में असमान है तो यह संभव ही नहीं कि एक ही व्यक्ति इतनी दूर बैठा अन्य स्थान की जानकरी हासिल कर सकें। तीसरी बात यह है कि त्रिपाठी जी ने भड्डरी के नाम की जितनी भी लोकोक्तियाँ संकलित की है वे सब की सब ज्योतिष ज्ञान पर आधारित है। जबकि घाघ की उक्तियों में कही भी ज्योतिष ज्ञान नजर नहीं आता। घाघ का सारा ज्ञान अनुभवजनित है। भड्डरी को पढ़ा लिखा व्यक्ति माना जा सकता है जो ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान रखता हो और उसी आधार पर अपनी विद्वता के बल पर कविता करता हो क्योंकि बहुत जगह स्वयं को ज्योतिष कहते हैं। जैसे –

"नवै अषाढ़ी बादलों, जो गरजै घनघोर,
कहें भड्डरी जोतिसी, काल पड़े चुहूँओर।"

(त्रिपाठी, 151)

एक जगह त्रिपाठी जी भड्डरी के जन्म की कहानी कहते समय उनके बारें में हुई भविष्यवाणी का हवाला देते हैं कि जन्म से पूर्व ही तय हो चुका था कि वे ज्योतिषी बनेंगे। साथ ही वे आगे लिखते हैं कि "आज दिन सभी नक्षत्र सम्बन्धी कहावतों के वक्ता को भड्डरी या भड्डली कहा जाता है।" (त्रिपाठी, 1) किसी व्यक्ति के पीछे कोई परम्परा चलती है तो इसका मतलब वह व्यक्ति उसका सूत्रधार रहा होगा और बाद में उसी प्रकार के व्यक्तियों को उसके ही नाम से प्रसिद्धि मिल जाती है या कहें कि वह नाम एक जाति के तौर पर व्यक्ति प्रयोग करने लगता है। जैसे मोहनदास करमचन्द गांधी के सिद्धांतों पर चलने वाले उसी उपनाम या सरनेम का प्रयोग करते हैं। थाईलेंड की अयुत्थ्या में 13-14 वीं शताब्दी में राम नाम का प्रसिद्ध राजा हुआ। उसके बाद आज तक भी वहाँ के राजा की पदवी राम ही रखी जा रही है। यहाँ समझ नहीं आता कि क्या भड्डरी से पहले कोई ज्योतिष का ज्ञान रखने वाला व्यक्ति था ही नहीं? या यह हो सकता है ज्योतिष का ज्ञान जनता में फैला हुआ नहीं था और भड्डरी ने पहली बार उससे परिचय करवाया? और जब परिचय हो गया तब क्या सामान्य जनता समझ जाती होगी या यह भी हो सकता है कि भारतीय किसान समाज का ज्योतिष ज्ञान से परिचय ही भड्डरी के माध्यम से हुआ हो।

घाघ और भड्डरी के नाम से प्रचलित लोकोक्तियों का सम्बन्ध सीधा किसानों से जोड़ा जाता है और अनुमान यही किया जाता रहा है कि ये लोग किसान समाज का ही हिस्सा रहे होंगे तभी इनको खेती-किसानी का इतना समृद्ध ज्ञान रहा होगा। घाघ के बारें में तो प्रचलित है कि वे राजदरबार का भी हिस्सा रहे थे। भड्डरी का ज्योतिष ज्ञान देखते हुए कह सकते हैं कि सीधा-सीधा किसानी से इनका भी कोई सम्बन्ध नहीं था। भड्डरी बेहद पढ़ा लिखा और गणितीय गणनाओं का ज्ञाता व्यक्ति रहा होगा। कुछ तथ्यों को सामने रखकर हम इस पर बात करेंगे –

1. घाघ के नाम से प्रचलित एक लोकोक्ति में बनिया, ठाकुर, वैध और पंडित - यह उच्च वर्ग के व्यक्ति हैं। वेश्या का जिक्र इसमें आया है और कहा गया है कि वेश्या मैली होगी तो उसका घर नष्ट हो जाएगा। गाँव की संस्कृति में वेश्याओं का स्थान नहीं है। मध्यकाल तक गाँव इतने भी बड़े नहीं हुए थे कि गाँव वेश्यावृति का अड्डा होगा और एक कवि अपनी कविता में जिक्र करेगा। तात्पर्य यह है कि इस उक्ति को रचने वाले व्यक्ति का सम्बन्ध अभिजात्य वर्ग और शहर से रहा होगा।
2. 'बाछा बैल बहुरिया जोय, ना घर रहे ना खेती होय' – त्रिपाठी जी ने लिखा है कि इस उक्ति में कहीं-कहीं बहुरिया की जगह पतुरिया पाठ प्रचलित है जिसका अर्थ वेश्या होता है। उन्होंने बहुरिया को ही युक्तिसंगत माना है। ऐसा मानने के पीछे कोई कारण नहीं दिया। समझ नहीं आता कि नई आई हुई बहु से घर कैसे उजड़ जाएगा? पुरानी बहु के कारण भी उजड़ सकता है। लोक का अनुभव तो यह भी है कि घर तो पुरुष के कारण भी उजड़ सकता है। अगर पतुरिया पाठ माने तो इसका अर्थ सही बैठ सकता है क्योंकि किसी भी सम्पन्न घर में वेश्या की वजह से घर उजड़ सकता है।
3. घाघ अपनी एक उक्ति में बताते हैं कि पृथ्वी पर ही बैंकुठ किसको नसीब है - जिसके खेत गाँव के पास चार हल की खेती होती हो, घर के धंधे में निपुण स्त्री हो, दूध देने वाली

गाय हो, अरहर दाल और जड़हन का भात हो, खूब निम्बू और गरम-गरम घी खाने को मिले, घर में ही शक्कर और दही मिल जाया करें, जिसको सुंदर कटाक्ष करती हुई स्त्री भोजन परोसे। किसान समाज में स्वर्ग नरक की अवधारणा सूचना क्रांति के बाद की बातें हैं। किसान समाज थान पूजने वाला रहा है। उनके देवता किसी स्वर्ग-नर्क में नहीं रहते। या तो वे खेत की सीमा पर रहते हैं या कुएं की पाल पर। इस उक्ति में आया बैंकुठ शब्द शहर के किसी कवि के दिमाग की उपज है। स्वर्ग-नर्क की कल्पना शास्त्रोक्त है।

4. घाघ की एक उक्ति है – "सुथना पहिरे हर जोतै, औ पौला पहिरी निरावै। घाघ कहे ये तीनो भकुवा, सर बोझा औ गावै।" (त्रिपाठी, 31) खेती करते समय आवश्यकतानुसार चीजों को काम में लिया जाता है। अगर सर्दी के समय खेत में काम कर रहे हैं तो सुथना पहनना सबसे उत्तम है। किसान के लिए सुथना कोई ऐय्यासी और दिखावें के लिए पहनने वाला वस्त्र नहीं है। पौला साधारण चप्पल को कहते हैं। रामनरेश त्रिपाठी ने लिखा है कि पौला एक प्रकार का खड़ाऊं है जिसमें खूँटी के बदले रस्सी लगाई जाती है और किसान लोग प्राय यही पहनते हैं। खड़ाऊं पहनकर खेत में कोई काम नहीं हो सकता। तीसरा जो व्यक्ति सिर पर बोझा लेकर गाये वह भी मूर्ख है। किसान को सिर पर बोझा लेकर गाने का कोई शौक नहीं है वह इसलिए गाता है ताकि रास्ता कट जाए। वह अपनी मस्ती में गाता चलता है चाहे कितना भी बोझ हो सिर पर। गाने के लिए संगीत सभा का आयोजन नहीं करेगा। किसानी में गायन की कला काम के साथ-साथ ही सीख ली जाती है, जैसे - हल जोतते समय कोई भी गीत, कुएं से पानी निकालते वक्त 'बारयो' कहना इत्यादि। लेकिन घाघ ने इन लोगों को मूर्ख कहा है। शायद इस उक्ति का रचनाकर किसानी से अपरिचित रहा होगा। कवि शास्त्रोक्त नियमों से खेती चाहता है।

5. एक उक्ति में साधु के साथ दासी का सम्बन्ध दिखाया गया है और गंदी वेश्या का जिक्र भी कवि करता है। दासियों और वेश्याओं की कोटि कौन तय कर रहा है जो किसान जीवन का कवि है। मंदिरों में दासी प्रथा दक्षिण भारत और दक्षिण पूर्व एशिया में प्रचलित रही है। वेश्यावृति का संस्थागत स्वरूप दक्षिण पूर्व एशिया में आज भी पाया जाता है। जो कवि इस उक्ति का रचनाकर है वह दासी प्रथा और वेश्यावृति से अच्छे से परिचित रहा होगा और यह प्रथाएँ किसान समाज से सम्बन्ध नहीं रखती। उक्ति इस प्रकार है – "आलस नींद किसाने नासे, चोरे नासे खाँसी। अँखियाँ लिबर बेसैव नासे, बाबे नासे दासी।" (त्रिपाठी, 31)

6. एक उक्ति में घाघ कहते हैं भूरे रंग की हथिनी, गंजे सिर वाली स्त्री और पोष माह की वर्षा – ये सब नसीब वाले को ही मिलती है। लोक जीवन में गंजे सिर वाली स्त्री असुन्दरता का प्रतीक है लेकिन यहाँ कवि ने नसीब वालो को मिलना बताया है। दूसरी बात हाथियों का मूल स्थान भारत नहीं है। यहाँ हथिनी के रंग को उक्ति में लिया गया। कवि पक्का ही थाईलैंड के हाथियों की नस्ल से परिचित रहा होगा और दूसरी बात यह कि किसानी में हाथियों का कोई उपयोग नहीं है। कवि ने जुलाहा और धुनिया को इंसानों में नही गिना है। "कोदौ मडुआ अन्न नहीं, जोलाहा धुनिया जन नहीं।" (त्रिपाठी, 33)

7. कवि को इन दोनों अन्नों का महत्त्व ज्ञात नहीं है और न ही यह अन्न शरीर को नुकसान देने वाले हैं। इनसे जुलाहा और धुनिया की तुलना समझ नहीं आई। जुलाहा और धुनिया भारतीय कबीलाई जातियाँ है। वर्ण व्यवस्था में ये शामिल नहीं हो पायेगी क्योंकि भारतीय कबीलाई किसान समाज का वर्ण व्यवस्था से कोई लेना-देना नहीं है। प्रत्येक जाति पीढ़ियों से अलग-अलग कार्य करती आई है। लेकिन वर्ण व्यवस्था के तयशुदा नियम इन जातियों पर लागू नहीं होते।

निष्कर्ष (Conclusion) -

यहाँ इन सब पर बातचीत इसलिए जरूरी है क्योंकि घाघ और भड्डरी के नाम से प्रचलित लोकोक्तियों को किसानी के साथ ही जोड़ा जाता है। अगर इन नामों के कोई कवि रहे भी होंगे तो या तो उनका किसानी से सीधा कोई सम्बन्ध नहीं था जिसकी वजह से उनकी उक्तियों इस प्रकार के अन्तर्विरोध देखने को मिलते हैं या फिर उनके कहने के बाद अन्य लोगों ने जानबुझकर कुछ अपनी तरफ से मिला दिया और वह उनके नाम से ही प्रचलित हो गई। दूसरा यह कि भड्डरी का किसानों से सीधा कोई सम्बन्ध कभी नहीं रहा। वे ज्योतिष के ज्ञाता रहे थे और उन्होंने खेती और मौसम से सम्बन्धित जितनी बातें कहीं है वे अनुभवजन्य ज्ञान से रहित है। शास्त्रोक्त बातें ही उसमें ज्यादा है। किसान हवा और मौसम को महसूस करके अनुमान लगा सकता है लेकिन वह ग्रहों, नक्षत्रों और दिशा-शूलों को आधार बनाकर खेती नहीं कर पाएगा। न उसके पास इतना समय होता है और न ही वह इतना जटिल गणनाएँ कहीं दर्ज करके रख सकता है। ज्योतिष का ज्ञान भड्डरी के समय नया-नया विषय रहा होगा

और दरबारों में राजाओं को खुश करने के लिए इस प्रकार की काव्य रचना उस काल की प्रवृति थी ही।

संदर्भ (References) -

Gupta, Suresh. "Astrological Elements in Bhaddari's Sayings: A Study of their Significance in Agriculture." Journal of Folklore Studies, vol. 7, no. 2, 2020, pp. 89-104.

Sharm, Manoj. *"Ghaagh aur Bhaddaree Kee Lokoktiyon Mein Kisaan Jeevan Kee Pratishtha."* Lok Saahity Anusandhaan Patrika, Vol. 3, no. 1, 2018, pp. 45-62

Tripathi, Ramnaresh (1931). *Ghagh aur Bhaddri* [Ghagh and Bhaddri]. Allahabad. Hindustani Academy